परिशिष्ट 4

नये नियम में शब्द ''राज्य''

नये नियम में ''राज्य'' शब्द का मूल अर्थ ''शासन, शक्ति या प्रभुता'' है। इसलिए, परमेश्वर का राज्य, परमेश्वर का शासन या प्रभुता है।

नये नियम में ''राज्य'' शब्द लगभग छः अलग-अलग संदर्भों में मिलता है। पहले, इस शब्द का इस्तेमाल सांसारिक, राजनैतिक शासन के लिए हुआ है। (देखिए मत्ती 4:8)। दूसरा, इस का इस्तेमाल इस्राएल के राज्य के लिए हुआ है (देखिए मत्ती 8:12)। तीसरा, इसका इस्तेमाल परमेश्वर के शासन या शक्ति के लिए किया गया है (देखिए मत्ती 12:28)। चौथा, इसे कलीसिया के लिए इस्तेमाल किया गया है, जो कि पृथ्वी पर परमेश्वर का विशेष शासन है। (देखिए मत्ती 11:11; 16:18; यूहन्ना 3:5; कुलुस्सियों 1:13)। पांचवां, इसे परमेश्वर के अनन्त राज्य, स्वर्ग के लिए इस्तेमाल किया गया है। (देखिए लूका 13:28)। छठा, इसे शैतान के अधिकार क्षेत्र के लिए इस्तेमाल किया गया है। (देखिए मत्ती 12:26)।

मत्ती ने वाक्यांश ''स्वर्ग का राज्य'' को बहुत ज़ोर देकर इस्तेमाल किया। मरकुस, लूका, और यूहन्ना ने, बिना अपवाद के वाक्यांश ''परमेश्वर का राज्य'' का इस्तेमाल किया है। स्पष्टतः इन दोनों वाक्यांशों का अर्थ एक ही है।

ध्यान से अध्ययन करें कि पवित्र आत्मा ने नये नियम में शब्द ''राज्य'' को किस तरह इस्तेमाल किया है। कोष्ठकों में दी गई संज्याएं संकेत हैं कि इस शब्द का प्रतीक कितनी बार आया है।

''एक/इस राज्य'' (2)

लूका (1) - 22:29, 30।
इब्रानियों (1) - 12:28।

''राज्य'' (10)

मत्ती (4) - 6:13 (इस आयत का अन्तिम वाक्य कुछ अति विश्वसनीय प्राचीन लेखों में नहीं मिलता) 8:12; 13:19; 13:38; 25:34।
मरकुस (1) - 11:10।
लूका (1) - 12:32।
प्रेरितों (1) - 1:6।
1 कुरिन्थियों (1) - 15:24।
याकूब (1) - 2:5।
प्रकाशितवाक्य (1) - 1:9।

''स्वर्ग का/के राज्य'' (31)

मत्ती (31) - 3:2; 4:17; 5:3; 5:10; 5:19 (दो बार); 5:20; 7:21; 8:11; 11:11; 11:12; 13:11; 13:24; 13:31; 13:33; 13:44; 13:45; 13:47; 13:52; 16:19; 18:1; 18:3; 18:4; 18:23; 19:12; 19:14; 19:23; 20:1; 22:2; 23:13; 25:1।

''राज्य का सुसमाचार'' (3)

मत्ती (3) - 4:23; 9:35; 24:14।

''परमेश्वर का/के राज्य'' (68)

मत्ती (4) - 12:28; 19:24; 21:31; 21:43।
मरकुस (14) - 1:15; 4:11; 4:26; 4:30; 9:1; 9:47; 10:14; 10:15; 10:23; 10:24; 10:25; 12:34; 14:25; 15:43।
लूका (32) - 4:43; 6:20; 7:28; 8:1; 8:10; 9:2; 9:11; 9:27; 9:60; 9:62; 10:9; 10:11; 11:20; 13:18; 13:20; 13:28; 13:29; 14:15; 16:16; 17:20 (दो बार); 17:21; 18:16; 18:17; 18:24; 18:25; 18:29,30; 19:11; 21:31; 22:16; 22:18; 23:50,51।
यूहन्ना (2) - 3:3; 3:5।
प्रेरितों (7) - 1:3; 8:12; 14:22; 19:8; 20:25; 28:23; 28:31।
रोमियों (1) - 14:17।

1 कुरिन्थियों (4) - 4:20; 6:9; 6:10; 15:50।
गलतियों (1) - 5:21।
कुलुस्सियों (1) - 4:11।
2 थिस्सलुनीकियों (1) - 1:5।
प्रकाशितवाक्य (1) - 12:10।

मसीह का राज्य (15)

मत्ती (3) - 13:41; 16:28; 20:21।
लूका (3) - 1:33; 22:30; 23:42।
यूहन्ना (3) - 18:36 (तीन बार)।
कुलुस्सियों (1) - 1:13।
2 तीमुथियुस (2) - 4:1; 4:18।
इब्रानियों (1) - 1:8।
2 पतरस (1) - 1:11।
प्रकाशितवाक्य (1) - 11:15।

पिता का राज्य (7)

मत्ती (4) - 6:10; 6:33; 13:43; 26:29।
लूका (2) - 11:2; 12:31।
1 थिस्सलुनीकियों (1) - 2:12।

''मसीह और परमेश्वर का राज्य'' (1)

इफिसियों (1) - 5:51।

जगत का/के राज्य (20)

मत्ती (4) - 4:8; 12:25; 24:7 (दो बार)।
मरकुस (5) - 3:24 (दो बार); 6:23; 13:8 (दो बार)।

लूका (7) – 4:5; 11:17 (दो बार); 19:12; 19:15; 21:10 (दो बार)।
इब्रानियों (1) – 11:33।
प्रकाशितवाक्य (3) – 11:15; 17:12; 17:17।

पृथ्वी के राजाओं पर राज्य (1)

प्रकाशितवाक्य (1) – 17:18।

शैतान का राज्य (3)

मत्ती (1) – 12:26।
लूका (1) – 11:18।
प्रकाशितवाक्य (1) – 16:10।

अतिरिक्त बाइबल अध्ययन के लिए एक मार्गदर्शक

बाइबल के अनुसार कोई परमेश्वर के साथ मेल कैसे कर सकता है ?

1. परमेश्वर के साथ मेल, अथवा उद्धार, उसका वह दान है जिसे यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा पाया जा सकता है। पढ़िये रोमियों 5:1, 2; यूहन्ना 14:6।
2. यीशु आपके उद्धार के लिए मरा। पढ़िये 1 पतरस 2:21-24; 2 कुरिन्थियों 5:21।
3. वह क्रूस पर बलिदान हुआ था। पढ़िये मत्ती 27:27-54।
4. इस तथ्य को जानने के बावजूद कि क्या होने वाला था, उसने परमेश्वर की इच्छा के आगे अपने आप को सौंप दिया। पढ़िये मत्ती 26:47-56।
5. उसका समर्पण प्रेम के कारण था। पढ़िये यूहन्ना 15:13।
6. उसके प्रेम में उसका ईश्वरीय मूल झलकता था। पढ़िये यूहन्ना 3:16।
7. वह परमेश्वर का पुत्र और इससे भी बढ़कर था। पढ़िये यूहन्ना 1:1-14।
8. यद्यपि वह ईश्वरीय था, उसने परमेश्वर की आज्ञा माननी सीखी। आपको भी परमेश्वर की आज्ञा माननी सीखनी चाहिए। पढ़िये इब्रानियों 5:8, 9।
9. अवज्ञाकारी लोग अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे और प्रभु की उपस्थिति से भी अलग किए जाएंगे। पढ़िये 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9।
10. आपके पापों ने आपको परमेश्वर से दूर कर दिया है। पढ़िये रोमियों 3:23; 6:23।
11. जो लोग पाप में लगे रहते हैं, वे अवज्ञाकारी हैं और स्वर्ग में नहीं जाएंगे। पढ़िये गलतियों 5:19-21।
12. हमें यीशु मसीह के लोहू के द्वारा धोया और पवित्र किया जाता है। पढ़िये 1 कुरिन्थियों 6:9-11।
13. आप अपने पापों के लिए खेद जताकर और पाप भरे जीवन से मुड़कर अनन्त विनाश से बच सकते हैं। पढ़िये 2 कुरिन्थियों 7:9, 10।
14. यीशु ने पापों की क्षमा के लिए क्रूस पर अपना लोहू बहाया। पढ़िये यूहन्ना 19:33, 34; मत्ती 26:28।
15. मसीह का लोहू आपको छुटकारा दिला सकता है। पढ़िये 1 पतरस 1:18, 19।
16. क्योंकि मसीह मृतकों में से जी उठा इसलिए छुटकारा सम्भव है। पढ़िये 1 कुरिन्थियों 15:20-22; 1 पतरस 3:21।
17. जब आप मन फिराते, उसकी मृत्यु और जी उठने में बपतिस्मा लेकर नये

जीवन के लिए जी उठते हैं आप पापों से छुटकारा और क्षमा पाते हैं। पढ़िये मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:36-39; रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12-14।

18. क्या आप चाहते हैं कि आपके पाप धोए जाएं? क्या आप मसीह में नया जीवन पाना चाहते हैं? पढ़िये प्रेरितों 22:16।
19. आज्ञाकारिता के लिए क्या आवश्यक है, के एक उदाहरण के लिए, पढ़िये प्रेरितों 8:26-39।
20. खोजे को यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करने पर पानी में डुबोया गया था। आप क्या करेंगे?

नोट्स

जब आपका बपतिस्मा हो जाए, तो कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें और हमें बताएं। यदि आपके नगर में मसीह की कोई कलीसिया है, तो कृपया उनसे सम्पर्क करें। यदि आपको कलीसिया नहीं मिलती, तो आप अपने घर में इसे आरम्भ कर सकते हैं (देखिए पृष्ठ 249-251)। जब आप पांच या अधिक मसीहियों के साथ आराधना करने लगें तो हमें सूचित करें, और हम आपको बाइबल क्लास तथा शिक्षा के लिए सामग्री भेजेंगे। जो लोग बाइबल के विषयों में अतिरिक्त अध्ययन करना चाहते हैं, परमेश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं, अथवा यीशु मसीह के बारे में दूसरों को सिखाना चाहते हैं, उन्हें यह साहित्य नि:शुल्क भेजा जाएगा।

परमेश्वर की इच्छा को जानने और आध्यात्मिक रूप में बढ़ने की इच्छा रखने वालों के लिए ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल हर दूसरे माह, बाइबल की कई पुस्तकों और विषयों पर अध्ययन प्रकाशित करता है। यदि आप ये पुस्तकें नियमित रूप से प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस कूपन को पूरा भरकर, डाक द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजें:

ट्रुथ फ़ॉर टुडे
पो. बॉक्स- 44
चंडीगढ़-160017

अपना नाम व पता नीचे दिखाए नमूने के अनुसार लिखें:
पूरा नाम.....
पता.....
गांव अथवा नगर.....
तहसील/तालुका व ज़िला.....
राज्य..... देश.....
पिन कोड (PIN).....

यदि आपका ई-मेल पता हो तो वह भी दे सकते हैं:
.....

कृपया यह पुस्तक पढ़ते हुए अपनी अतिरिक्त आवश्यकताओं के बारे में बताएं। नीचे दिए कोष्ठकों में, जहां उपयुक्त हो ☑ टिक करें।

☐ मुझे अपने लिए एक प्रति चाहिए

☐ परमेश्वर के प्रति समर्पण करने से पहले मैं और सीखना चाहता/चाहती हूं

☐ मैंने बपतिस्मा ले लिया है और निरन्तर यह सामग्री पाना चाहता/चाहती हूं

आप ट्रुथ फ़ॉर टुडे का साहित्य किस भाषा में पाना चाहेंगे?

☐ अंग्रेज़ी ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू